



FIFTH GLOBAL SANSKRIT CONFERENCE - 2026

BANGKOK, THAILAND

On the theme “Indian Knowledge Systems: Bridging
Cultures and Knowledge Traditions”

28th-30th SEPTEMBER 2026

VENUE: Sanskrit Studies Centre,
Silpakorn University Thawi Watthana District,
Bangkok, Thailand.



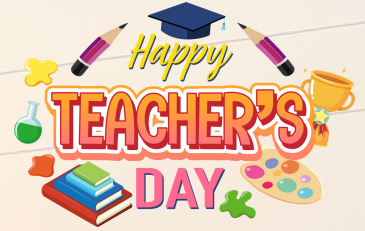
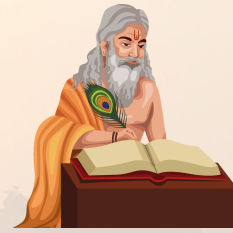
ORGANIZERS

Global Sanskrit Forum, Bharat
Sanskrit Studies Centre,
Faculty of Archaeology, Silpakorn University, Bangkok,
Thailand and Thai Bharat
Culture Lodge, Bangkok, Thailand

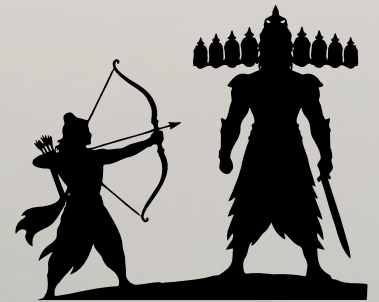
Important Days & Festivals

September - October 2026

04 Sep	Friday	Krishna Janmashtami
05 Sep	Saturday	Teachers' Day
08 Sep	Tuesday	International Literacy Day / Paryushana Begins
13 Sep	Sunday	Samaveda Upakarma
14 Sep	Monday	Hartalika Teej
14 Sep	Monday	Ganesh Chaturthi / Hindi Diwas
15 Sep	Tuesday	National Engineers' Day
16 Sep	Wednesday	Balarama Jayanti / World Ozone Day
17 Sep	Thursday	Vishwakarma Puja / Kanya Sankranti
19 Sep	Saturday	Dadhichi Jayanti
21 Sep	Monday	International Day of Peace
22 Sep	Tuesday	Vamana Jayanti / Parsva Ekadashi
25 Sep	Friday	Anant Chaturdashi / Ganesh Visarjan
27 Sep	Sunday	Pitru Paksha Begins / World Tourism Day



02 Oct	Friday	Gandhi Jayanti / Lal Bahadur Shastri Jayanti
06 Oct	Tuesday	Indira Ekadashi
10 Oct	Saturday	Pitru Amavasya
11 Oct	Sunday	Sharad Navratri Begins / Ghatasthapana / Maharaja Agrasen Jayanti
15 Oct	Thursday	Dr. A.P.J. Abdul Kalam Jayanti
17 Oct	Saturday	Saraswati Puja / Maha Saptami / Tula Sankranti
18 Oct	Sunday	Durga Ashtami
19 Oct	Monday	Maha Navami / Ayudha Puja
20 Oct	Tuesday	Vijayadashami / Dussehra
21 Oct	Wednesday	Kashi Bharat Milap
24 Oct	Saturday	United Nations Day
25 Oct	Sunday	Sharad Purnima / Kojagara Puja
26 Oct	Monday	Maharishi Valmiki Jayanti
29 Oct	Thursday	Karwa Chauth
31 Oct	Saturday	Sardar Patel Jayanti / Rashtriya Ekta Diwas (National Unity Day)



अस्मिता II ASMITAA
ज्ञान की ♦ नारी की ♦ भारत की

वन्दे मातरम्।

सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्,
शस्यश्यामलाम् मातरम्। वन्दे मातरम्॥ 1॥

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम् मातरम्। वन्दे मातरम्॥ 2॥

कोटि-कोटि कण्ठ कल-कल निनाद कराले,
कोटि-कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले,
के बॉले माँ तुमि अबले,
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्,
रिपुदलवारिणीं मातरम्। वन्दे मातरम्॥ 3॥

तुमि विद्या तुमि धर्म, तुमि हृदि तुमि मर्म,
त्वम् हि प्राणाः शरीरे, बाहुते तुमि माँ शक्ति,
हृदये तुमि माँ भक्ति, तोमारेई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे-मन्दिरे।
वन्दे मातरम् ॥ 4॥

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्,
नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्,
सुजलां सुफलां मातरम्। वन्दे मातरम्॥ 5॥

श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्,
धरणीम् भरणीम् मातरम्। वन्दे मातरम्॥ 6॥

भारत माता को मैं वन्दन करता हूँ।

जल से समृद्ध तथा धन धान्य से समृद्ध दक्षिण के मलय पर्वत के ऊपर से आने वाली वायु की लहरों से शीतल होने वाली तथा विपुल खेती के कारण श्यामलवर्णा भारत माता को मैं वन्दन करता हूँ॥1॥

चमकती चांदनियों के कारण यहां पर रातें उत्साह भरी होती हैं, फूलों से भरे हुए पौधों के कारण यह भूमि वस्त्र परिधान किए समान शोभनीय प्रतीत होती है। निरंतर प्रसन्न रहने वाली तथा मधुर बोलने वाली, वरदायिनी, सुखप्रदायिनी ऐसी भारत माता को मैं वन्दन करता हूँ॥2॥

तीस करोड़ मुखों से निकल रही भयानक गर्जनाएं तथा साठ करोड़ चमकदार तलवारों से युक्त हाथों से युक्त, हे माँ! आपको अबला कहने की धृष्टता कौन करेगा? वास्तव में हे मातः! आप सामर्थ्यशालिनी हैं। शत्रु की सेना के आक्रमणों का मुंह-तोड़ जवाब देकर हम संतानों का रक्षण करनेवाली हे मातः, मैं आपको प्रणाम करता हूँ॥3॥

आपसे ही हमारा ज्ञान, चरित्र तथा धर्म है। आप ही हमारा हृदय तथा चैतन्य हैं। हमारे प्राणों में भी आप ही हैं। हमारी कलाईयों में (मुठ्ठीमें) शक्ति तथा अंतःकरण में काली माता भी आप ही हैं। मंदिरों में हम जिन मूर्तियों की प्रतिष्ठापना करते हैं, वे सभी आपके ही रूप हैं। इस प्रकार बहुत रूपों वाली भारत माता को मैं वन्दन करता हूँ॥4॥

अपने दस हाथों में दस शस्त्र धारण करनेवाली, शत्रुसंहारिणी दुर्गा भी आप तथा कमलपुष्पों से भरे सरोवर में विहार करने वाली कमलकोमल लक्ष्मी भी आप ही हैं। विद्यादायिनी सरस्वती भी आप ही हैं। आपको हमारा प्रणाम है। मातः! मैं आपको वंदन करता हूँ। ऐश्वर्यदायिनी, पुण्यप्रद तथा पावन, पवित्र जलप्रवाहों से तथा अमृतमय फलों से समृद्ध माता आपकी महानता अतुलनीय है, उसकी कोई सीमा ही नहीं है। हे मातः! हे जननी! हमारा तुम्हें प्रणाम है॥5॥

मातः! आपका वर्ण श्यामल है। आपका चरित्र पावन है। आपका मुख सुंदर हंसी से विलसित है। सर्वाभरणभूषित होने के कारण आप कितनी सुंदर लगती हैं। सच में, हमें धारण करनेवाली तथा हमें संभालने वाली भी आप ही हैं। हे मातः! हमारा आपके चरणों में पुनश्च प्रणिपात। हे भारत माता! आपको मैं बारम्बार नमन करता हूँ॥6॥



प्रो. श्रीनिवासः वरखेडी
कुलपतिः
Prof. Shrinivasa Varakhedi
Vice-Chancellor



केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः

संसदः अधिनियमेन स्थापितः

Central Sanskrit University

Established by an Act of Parliament

के.सं.वि./कुलपति-101/2025-26/451

दिनाङ्क - 05.01.2026

मा. कू. द्वितीया, वि.सं. 2082

सन्देशः

“बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत् प्रैत नामधेयं दधानाः” इति वेदमन्त्रेण सभाजिता भारतीयज्ञानपरम्परा वेद-वेदाङ्ग-उपनिषद्-रामायण-महाभारत-दर्शन-अर्थशास्त्र-धर्मशास्त्र-विमानशास्त्र-ज्योतिष-गणितादि-ग्रन्थैः परिपूरिता विद्यते। संस्कृतभाषायां निबद्धं ज्ञानं भारतस्य गौरवं वर्धयति पोषयति च- ‘भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा’ अर्थात्संस्कृताधिष्ठितं शास्त्रीयचिन्तनम्, भारतस्य बौद्धिक-सांस्कृतिकयोश्च चेतनायाः मूलाधारभूतम् अस्ति। अद्य अस्य ज्ञानस्य सर्वैः विषयैश्च सह नियोजनम् अत्यावश्यकम्। यथोच्यते राष्ट्रिया शिक्षा-नीतिः 2020 इत्यस्य 22.15 मध्ये यत्- “संस्कृतभाषायाः व्यापकं महत्त्वपूर्णं च योगदानं, तथा विविधेषु विषयेषु च विद्यमानं साहित्यं, सांस्कृतिकं महत्त्वं, वैज्ञानिकस्वभावं च दृष्ट्वा, संस्कृतभाषा न केवलं संस्कृतपाठशालासु विश्वविद्यालयेषु च सीमिता भविष्यति, अपि तु एतां मुख्यधारायां आनयिष्यते। विद्यालयेषु त्रिभाषासूत्रान्तर्गतं विकल्परूपेण, उच्चशिक्षायां च अपि सा शिक्षिता भविष्यति। संस्कृतभाषा पृथग्रूपेण नैव अध्यापनीया, किन्तु रुचिपूर्णाः नवाचारपद्धतिभिः सह, गणितम्, खगोलशास्त्रम्, दर्शनशास्त्रम्, नाट्यविद्या, योगशास्त्रम् इत्यादिभिः समकालिकैः प्रासङ्गिकैः विषयैः सह संयोज्य अध्याप्यते।” एतादृशं भारतसर्वकारस्य व्यापकं चिन्तनम् अवलोक्य वयमेतं ज्ञाननिधिम् अकादमिकपरिसीमातो निष्कास्य समाजस्य व्यापकवर्गेषु सरल-सुगमतया, समकालीनसन्दर्भेषु च सम्यक् प्रकारेण प्रसारयितुं कृतदृढनिश्चयाः स्मः।

अस्मिता-नाम्नी पत्रिकायाः एषः प्रयत्नः अत्यन्तं स्तुत्यं यदैषा भारतीयज्ञानप्रणालीं जनसामान्यस्य कृते जीवनोपयोगि-रूपेण प्रस्तौति। एषा पत्रिका भारतीय-ज्ञान-परम्परायाः आधुनिकतायाश्च मध्ये सशक्तं सेतुं निर्मास्यति तथा च भारतीयबौद्धिकन्यासम् आबालवृद्धं प्रति प्रापणाय महत्त्वपूर्णं योगदानं करिष्यतीति मदीयाः शुभकामनाः, आशासे अस्य भविष्यं निरन्तरं जाज्वल्यमानं कीर्तिमानं च भवत्विति।

(प्रो. श्रीनिवासः वरखेडी)

कुलपतिः

56-57, सांस्थानिक क्षेत्र, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058 (भारत)

56-57, Institutional Area, Janakpuri, New Delhi-110058 (INDIA)

(O) 011-28523949 www.sanskrit.nic.in

vc@sanskrit.ac.in / vicechancellor@csu.co.in



श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
(Central University)

बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110 016 (भारत)
B-4, Qutub Institutional Area, New Delhi-110 016 (INDIA)



प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः
Prof. Murlimanohar Pathak
Vice Chancellor

पत्र.सं.ला.ब.शा./वी.सी./2026/ 150

दिनाङ्कः 05.01.2026

शुभाशंसावचांसि

भवति हि सचेतसामप्यभिवृत्तिः पुण्येन पुण्याय च। तदेव तद्भावनाभाविताः सहस्रोऽप्यधिका जना अभिव्यक्त्या तयाऽऽप्लाविताः सत्कर्मसु प्रयोजिता विनियोजिताश्च। स्मरामि महनीयं कर्म तेषां मनीषिणां येषामनवद्यमवदानं यच्चिरं पुरातनमप्यद्यतनमिव प्रतिभाति। प्रमाणमपि वाल्मीकि-व्यास-कालिदासप्रभृतीनां कृतय इति। यथासमयमपेक्षां निरीक्ष्य महात्मानस्ते लोकोपकारनिबद्धान् भावाँल्लिपिना स्थापयामासुरात्मभूतेषु ग्रन्थेषु। स्मारिकेयं लिपिः पश्यन्तीभावितमध्यमोद्भूतनभोगुणव्यञ्जितशब्दराशिना स्फुटितभावाभिव्यक्तिरेव पुण्यात्मनां सामान्यजनानाञ्च सुरम्यं सुचिरं कल्याणञ्च कलयति। तदीयं संरक्षणमेव प्रकाशनकर्मणः पाटवं विधानम्। तत्रैव नैके प्रयासा अविच्छिन्नं प्रयतमानाः साधुपुरुषाणां पुरस्तादासाद्यन्ते। तेष्वन्यतमोऽयमपि प्रयासः पाठकानां सुचिराय सौभाग्याय प्रकल्पितः। नामाभिधानमपि 'अस्मिते'ति स्वकीयमन्वर्थं प्रकाशयति। ईषद्भासस्याप्यल्पत्वं नञ् बोधयति। तेन सुधियां हृदि सहजस्थिता सहृदयभाविता पुण्यप्रयोजिताऽभिनवरुचिरा नानारसाप्लाविताऽलौकिकार्थेषु चित्तविस्फारसमर्था पत्रिकेयमिति प्रतिभाति, यद्वा शब्दसाहित्यस्यास्तित्वमस्यां समाहितमित्यर्थोऽपि विभक्तिप्रतिरूपक-अस्तीत्यव्ययेन भावप्रत्ययान्तशब्देन प्रतीयते।

पत्रिकेयं विविधानां विचाराणां भारतीयज्ञानपरम्परायाश्च संरक्षकत्वेन निधिरिव सन्तिष्ठत इति मन्यमानोऽहं नितान्तमामोदमातिष्ठे। तदीयानुरोधेन सर्वेषां प्रकाशकानां सर्वविधं मङ्गलं कामयमानः पत्रिकायाश्चिरं संस्थापनाय श्रीमुकुन्दमन्दमाश्रये।

विद्वदन्तरनिशं सुखयन्ती प्राज्ञबुद्धिविभवं विकिरन्ती।

पत्रिकेयमधुनाऽस्मितनाम्नी हर्षयेद्बुधमनांसि सदैव॥

(Signature)
05.01.2026
(मुरलीमनोहरपाठकः)



हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय
Hemvati Nandan Bahuguna Garhwal University

प्रो. श्रीप्रकाश सिंह
कुलपति

Prof. Shri Prakash Singh
Vice Chancellor

श्रीनगर (गढ़वाल) उत्तराखण्ड - 246174, भारत
Srinagar Garhwal, Uttarakhand- 246174, India
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University)

Ref. No. : VC/HNBGU/2026/503
Date 05/01/2026

शुभकामना-संदेश

उच्च शिक्षा और शोध का उद्देश्य तभी पूर्ण होता है, जब उसका लाभ समाज के व्यापक वर्गों तक पहुँचे। भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित जीवन-दर्शन, नीति और व्यावहारिक ज्ञान आज के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक हैं। इस ज्ञान के माध्यम से भारत सम्पूर्ण विश्व में विश्वगुरु के पद पर प्रतिष्ठापित था। शास्त्रानुसार- एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः। वर्तमान तकनीकी युग में शिक्षण प्रौद्योगिकी एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे महत्वपूर्ण विषयों का मार्गदर्शन करने के लिये संस्कृत का ज्ञान प्रत्येक युवा तक पहुँचना अत्यन्त अनिवार्य है, जिससे आधुनिकता की अन्धी दौड़ का अन्धानुकरण न करके प्रत्येक युवा राष्ट्रनिर्माण में अपनी महती भूमिका निभा सके।

इन्हीं महनीय विचारों की उर्वर भूमि पर किया गया अस्मिता पत्रिका का यह प्रयास प्रशंसनीय है, जो अकादमिक चिंतन और जनजीवन के बीच सार्थक संवाद स्थापित कर रही है। यह मञ्च भारतीय ज्ञान प्रणाली को आधुनिक समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रस्तुत करने में प्रभावी सिद्ध होगा।

मैं अस्मिता की इस पहल के सफल और दीर्घकालिक प्रभाव की कामना करता हूँ।


प्रो. श्रीप्रकाश सिंह